Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 626–635

VARIOUS DIMENSIONS OF POETRY IN BAGHELI LANGUAGE

बघेली भाषा में कविता के विविध आयाम

Nirpat Prasad Prajapati [1]

[1] Assistant Professor - Hindi, Government College Bansagar, District - Shahdol (MP), India

ABSTRACT

English: The ancient language Sanskrit is called the mother of Hindi language. Hindi language developed in the sequence of Sanskrit - Pali-Prakrit - Apabhramsha - Hindi. Three dialects or sub-languages come under Eastern Hindi - Awadhi, Bagheli, and Chhattisgarhi. Bagheli language is a major language of the Eastern Hindi division of Hindi language. The Bagheli language region is known as Baghelkhand. This region is mentioned since ancient times. In the Ramayana period, this land was known as Kaushal province or Mahakaushal. Around the 11th-12th century, Vyaghradev Baghel of the branch of Solanki Rajputs of Alhalwada Patan defeated the ruler here and laid the foundation of the Baghel dynasty, since then Baghelkhand was ruled by Baghel Rajputs till the merger of native states. This region came to be known as Baghelkhand after the name of Baghel dynasty and the language spoken in the region ruled by Baghel dynasty is known as 'Bagheli'. Initially, the literature of Bagheli language is available orally in the form of folk songs, folk tales, ritual songs, proverbs, idioms, stories, Mukriyas, tales etc. Being oral, it is natural for their form to change due to which we are not able to know the initial form of Bagheli dialect. The language spoken in Rewa, Sidhi, Satna, Shahdol region of the eastern division of Hindi language is called Bagheli language, whose eminent poets are - Saifuddin Siddiqui, Saifu ji, poet Sukhai Prasad Atal, Babulal Dahiya, Shambhu Kaku. Shri Nivas Shukla Saras who gave new dimensions to the Bagheli poetry tradition and provided a strong poetic tradition in which the social, political and cultural consciousness of the country and society is depicted. Bagheli poets have attacked the distortions in the society and the traditional inconsistencies of the society in their creations. The struggle for freedom from problems and evils like farmers, dowry system, unemployment, child marriage, population growth, rising inflation, drought, famine, environment etc. has been made a part of Bagheli language literature by more or less all the poets. Bagheli poets propagated the progressive social conditions of India, national consciousness and humanitarian outlook influenced by Indian tradition and expressed respect and reverence towards women. The literature of Bagheli language is rich in various genres and is not inferior to other regional dialects in any case.

Hindi: आदि भाषा संस्कृत को हिंदी भाषा की जननी कहा जाता है. संस्कृत – पालि-प्राकृत -अपभ्रंश -हिंदी के अनुक्रम में हिंदी भाषा का विकास हुआ। पूर्वी हिंदी के अंतर्गत तीन बोलियां या उपभाषाएँ आती हैं – अवधी, बघेली, और छत्तीसगढ़ी। बघेली भाषा हिंदी भाषा के पूर्वी हिंदी प्रभाग की एक प्रमुख भाषा है। बघेली भाषा क्षेत्र को बघेलखंड के नाम से जाना जाता है। इस प्रदेश का उल्लेख प्राचीन समय से मिलता है। रामायण काल में इस भू-भाग को कौशल प्रांत या महाकौशल के नाम से जाना जाता था। 11वीं-12वीं शताब्दी के लगभग आल्हलवाड़ा पाटन के सोलंकी राजपूतों की शाखा के व्याघ्रदेव बघेल ने यहां के शासक को पराजित करके बघेल राजवंश की नींव डाली, तब से देशी राज्यों के विलीन होने तक बघेलखंड में बघेल राजपूतों द्वारा शासन किया जाता रहा है। बघेल वंश के नाम से इस भू-भाग को बघेलखंड के नाम से जाना जाने लगा तथा बघेल वंश द्वारा शासित भूभाग में बोली जाने वाली भाषा को 'बघेली' के नाम से जाना जाता है। प्रारम्भ में बघेली भाषा का साहित्य लोक गीतों, लोक कथाओं, संस्कार गीतों, लोकोक्तियों, मुहावरों, कहानियों, मुकरियों, किस्से आदि के रूप में मौखिक रूप में प्राप्त होता है। मौखिक होने के कारण उनके स्वरूप में परिवर्तन आना स्वाभाविक है जिससे हमें बघेली बोली के प्रारम्भिक स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता है। हिन्दी भाषा के पूर्वी प्रभाग की रीवा, सीधी, सतना, शहडोल क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को बघेली भाषा कहा जाता है, जिसके मूर्धन्य कवि - सैफुद्दीन सिद्दीकी,सैफू जी,कवि सुखई प्रसाद अटल,बाबूलाल दाहिया,शम्भू काकू, हैं। श्री निवास शुक्ल सरस जिन्होंने बघेली काव्य परंपरा को

Corresponding Author

Nirpat Prasad Prajapati,
drnirpatprassdprajapati@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4191

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

नए आयाम दिया व एक सुदृढ़ काव्य परंपरा प्रदान की जिसमें देश व समाज की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना चित्रित हुई है।बघेली कवियों ने समाज में पनपी विकृतियों और समाज की रूढ़िगत विसंगतियों पर प्रहार अपने रचनाओं में किया है। किसान, दहेज प्रथा, बेरोजगारी, बाल-विवाह, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती महंगाई, सूखा, अकाल, पर्यावरण आदि समस्याओं व बुराइयों से मुक्ति की छटपटाहट को बघेली भाषा साहित्य का अंग कमोबेश सभी कवियों नेरचना का विषय बनाया। बघेली कवियों ने भारतीय परंपरा से प्रभावित भारत की प्रगतिशील सामाजिक परिस्थितियों,राष्ट्रीय चेतना व मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रसारित किया व नारी के प्रति श्रद्धा व सम्मान व्यक्त किया। बघेली भाषा का साहित्य विविध विधाओं में समृद्ध है और अन्य क्षेत्रीय बोलियों से किसी भी मामले में कमतर नहीं है।

Keywords: Bagheli, Regional Dialect, Rimarhar or Rimai, Rimahi, Kaithi, Exploitation, Oppression, Poverty, Farmer बघेली, क्षेत्रीय बोली, रिमर्हर या रिमाई, रिमही, कैथी, शोषण उत्पीडन, गरीबी, किसान

1. प्रस्तावना

बघेली साहित्य का विकास : बघेली भाषा का साहित्य मौखिक रूप से आगे बढ़कर लिखित रूप में विकसित हुआ, बघेली कविता का प्रामाणिक आदि कवि के रूप में (सन-1857) ईस्वीरदास को माना जाता है। जिनके उपरांत बघेली कविता में अनवरत लेखन जारी है। जिस कड़ी में बैजनाथ 'बैजू, सैफुद्दीन सिद्दीकी 'सैफू, शम्मू काकू, रामदास पयासी व रामनाथ सोनी आदि कवि हैं। जिन्हें प्रो. सेवाराम त्रिपाठी ने परम्परागत भावबोध के कवि माना है। पंडित हरिदास की कविता हास्य व व्यंग्य प्रधान कविता है। उन्होंने समाज की समस्याओं का चित्रण काव्यात्मक रूप में किया है जैसे-

"कोहू केर गिरा है अगरा-पगरा,

अऊ कोहू केर गिरा ओसार।

हरीदास के मुड़हर गिरिगा,

रोमई धरे कपार।"1

प्रारम्भिक बघेली कविता में प्रकाशित कृतियां कम मिलती हैं, पंडित हरिदास का कोई संग्रह प्राप्त नहीं होता है। बैजनाथ पाण्डेय 'बैजू' की सूक्तियां, सैफुद्दीन सिद्दीकी 'सैफू' की ‘भारत केर माटी, दिया बरी भा अंजोर, एक दिन अइसन होई। रामदास पयासी की ‘माटी केर महक आदि काव्य संग्रह प्राप्त होते हैं। परम्परागत भाव बोध के कवियों के बाद बघेली कवियों की लम्बी श्रृंखला है, जिनमें प्रो. आदित्य प्रताप सिंह,डॉ.भगवती प्रसाद शुक्ल, गोमती प्रसाद 'विकल', कालिका प्रसाद त्रिपाठी, डॉ. अमोल बटरोही, बाबूलाल दाहिया, डॉ. शिवशंकर मिश्र 'सरस', सुदामा 'शरद', भागवत प्रसाद पाठक, रामचन्द्र सोनी 'विरागी', हरिनारायण सिंह 'हरीश, विजय सिंह परिहार,धीरेन्द्र त्रिपाठी, मैथिलीशरण शुक्ल 'मैथिली',अनूप 'अशेष', डॉ. सुखई प्रसाद ‘अटल’ श्रीमती विनोद तिवारी, श्रीनिवास शुक्ल 'सरस', लक्ष्मण सिंह परिहार,ओम द्विवेदी आदि हैं, जिन्होंने बघेली कविता को समृद्ध किया है और कर रहे हैं। इस आलेख में हम बघेली भाषा में लिखे गए काव्य साहित्य के विविध आयाम को विस्तार से देखने का प्रयास करेंगे :-

बघेली काव्य का सामाजिक आयाम:- बघेली काव्य में समाज के विविध पक्षों पर रचना देखने को मिलती है। बघेली का कवि समाज के वर्तमान विकृत स्वरूप के प्रति चिन्तित प्रतीत होता है। समाज में फैली हुई कुरीतियों, रुढ़वादिता, शोषण, उत्पीड़न और अन्यान्य, अनैतिक कृत्यों के कारण कवि में आक्रोश, नैतिक मूल्यों में ह्रास हुआ है, सामाजिक व्यवस्था चरमरायी है ऐसे में कवि भी अपनी बात रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है :-

बारह बरिश कै बिटिया बपुरी, बईठ राणपा भोगै.

बडमंसी का लइके अपने, नाव समाज के रोबै ।2

समाज में व्याप्त आपाधापी, स्वार्थ की प्रवृत्ति और खुद तक सीमित जीवन यानी मात्र अपना पेट भरने तक की सोच एक स्वस्थ्य समाज के लिए ठीक नहीं है कुछ पक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

मनई अन्धेरि करै देखा अँखिमुन्द ।

आपुसु माँ गोरुअन अस मचिगा खुरखुन्द।

काज कहौ लगा नहीं, होइगा मटिमगरा।

एँह अंधाधुन्ध माँ सँघरा हो सँघरा।

पानिउ भर मिलइ कहउँ, लाइन माँ लागा,

तू पी लेऽ आन का धँघोय देऽ,

होय जउन होय देऽ......।।3

इस तरह का अंधेर मचा हुआ हो, तो जीवन यापन के लिए मात्र एक ही रास्ता बचता है और वह है कि समाज के ऐसे लोगों से साठ -गांठ करना जो असमाजिक तत्व हैं, अपने ताकत और दांव-पेंच के बल पर समाज में बर्चस्व स्थापित करते हैं :-

नंगन के साथ चला, नेतन से पटि लेऽ,

मन पसार रुपिया के सथरी माँ सँटि लेऽ,

नंगदाँय खूब करा, दुनिया सब लूटि लेऽ,

पाहुँच भर बनी रहै, सरकारी छूटि लेऽ,

बरत देखा राहा जो कोहू के,

तुहूँ पहुँचा अउर थोर का खोय देऽ,

होय जउन होय देऽ.. ।। 4

सामाजिक भेदभाव पर प्रहार :-बघेली कवि समाज में फैले सामाजिक भेदभाव, जाति-पाति, ऊंच-नीच आदि असमानता के कारकों को नकारते हुए सामाजिक समानता पर बल देते हैं। भेदभाव से समाज में अराजकता का माहौल है, इसलिए भेदभाव को मिटाने व सामाजिक सौहार्द की अपील करते हुए कहते हैं कि-

जात-पाँत के भेद माँ, चलिहैं लाठी बोंग,

कितनेव सरगे जहल माँ, मनई बना चिपोंग।

कोऊ ऊँच न नीच, एक चाकै के माटी,

भेदभाव कानून कायदा, हम तुम छाँटी।5

शोषण-उत्पीडन का चित्रण:- पारिवारिक विघटन व समाज में व्याप्त अत्याचार के कोलाहल से व्यथित होकर कवि समाज या परिवार का साथ देने में असमर्थ नजर आते हुए कहता है:-

"अब नहीं सहा करै त का करी,

कोउ नहीं कहा करै त का करी

जहाँ तक बस चला त बाँह गहेन

अब नहीं गहा करै त का करी।"6

आडम्बर और पाखंड पर प्रहार :- बघेली कवि समाज में फैलाए गए ढोंग-आडम्बर का पर्दापाश करते हुए समाज को सचेत करते हैं। भाग्य के भरोसे न बैठने, कर्मवादी बनने की प्रेरणा देते हैं। पोथी, पत्रा, सुदिन आदि केवल आडम्बर है। हमारा भाग्य हमारे कार्यों पर आधारित होता है।इसी संदर्भ में कुछ पंक्तियाँ देखिये :-

पंडित बाबा सुदिन बनाइन पोथी पत्रा देखिन ।

करम राम का लिखा है,ओऊँ नहीं सरेखिन ।।7

मानवतावादी चिंतन के आयाम:- बघेली काव्य साहित्य में प्रत्येक मानव के अंदर मानवतावादी सोच को विकसित करने और आपसी द्वेष, घृणा के भाव को मिटाकर देश में मिल-जुल कर रहने के लिए प्रेरणा प्रत्येक बघेली कवि देने का प्रयास करता है । वास्तव में कवि का धर्म यही होता है कि वह समाज को जोड़ने का कार्य करे –

आवा एक काम करी, पहिले मन साफ करी ।

न हमका देखके तू ज़रा, न तोहका देखके हम जरी. । ।

महँगाई और बेरोजगारी का चित्रण:-समाज में फैली महंगाई जैसी आपदा का चित्रण बघेली साहित्य में यथार्थ रूप में किया गया है। महंगाई से समाज में अराजकता फैली हुई है। किसान का अनाज सस्ता है लेकिन पूंजीपतियों द्वारा बनाए गए सभी उत्पाद महंगे हैं। जिससे ग्रामीण लोगों की हालत जर्जर होती जा रही है। किसान पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है।

चरसा उधेर लिहिस आय महंगाई सब,

नोन-तेल लकड़िन माँ बिकेंगे, गिरहस्ती ।

महंगा केराना, अनाज सब सस्ता है,

खाद अऊर बीज केर करजा गठि आयेन है। 8

राष्ट्रीय भावधारा एवं देश प्रेम:- बघेली की काव्य कृतियों में राष्ट्रीय भावना का कई स्थानों पर चित्रण हुआ है। उनके हृदय में देश-प्रेम और देश भक्ति का अंकुरण है। वे व्यक्ति की अपेक्षा देश को और अपनी माटी को बड़ा मानते हैं।

हमका न चाही हेवाल अउ हवेली। हमका न चाही ऊ कुरसी बरेली।

अन्तिम मा एत्ता भर ताकि लिहे सरस-माथे मां मलि लीन्हे माँटी बघेली ।।9

काव्य सौंदर्य:- बघेली कविताओं में सौन्दर्य के नए-नए आयाम हैं। कवियों ने अपने समय के यथार्थ को उसी रूप में नहीं देखा बल्कि यथार्थ को विविध आयामों से देखने का प्रयास किया हैं। बघेली कविता में जीवन के विविध आयाम उद्घाटित होते हैं। व्यंग्य का करारापन बहुत प्रभावी है। ग्रामीण व किसान जीवन का जीवंत बेबाक व सटीक वर्णन भी किया गया है। ऐसे बिम्बों को रूपायित किया है कि ग्रामीण जीवन आंखों के सामने परिलक्षित होने लगता है। ग्रामीण जनों की दैनिक दिनचर्या, दैनिक जीवन का जीवंत बिम्ब देखिये :-

'फुदुकि उठी ओरिन मा छोटि छोटि गउरड्या,

चलै लागि मनइन कै डोरि,

कुहुकी दै चरबाह लै-लै गाय चलें,

बजै लागि घाँटी खोरि-खोरि ।।"10

प्रकृति चित्रण:-प्रकृति के रणमीय चित्रण में भी बघेली कवि पीछे नहीं हैं । सुबह का वर्णन करते हुए प्रकृति के मनोहारी बिम्ब का चित्रांकन कविताओं के माध्यम से किया गया है:-

चिरईउ व गाइ रहीं, उड़ि-उड़ि के जाइ रही,

पूरब माँ सुरुज है ललान । देखा रे! होइ रहा बिहान।"11

कृषक जीवन का चित्रण:- किसान जीवन का यथार्थ वर्णन बघेली कवियों ने अपनी कविताओं में किया है। किसान जीवन कितना श्रमशील व आर्थिक रूप से कमजोर है, उन्हें केवल नमक रोटी भोजन के रूप में प्राप्त होता है जबकि किसान विविध प्रकार के फसलों को उपजाता है।

"फेंड बाँधि सब किसान खेतन मा जोति रहें,

खाइ-खाइ रोटी अरु लोन।

काने माँ अँगुरी के बिरहा धै तानि रहें,

माँगि रहें धरतिऊ से सोन।"12

राजनीति पर करारा व्यंग्य :- बघेली कवियों ने राजनीति पर करारा व्यंग्य करते हुए नेता व सरकार के यथार्थ चरित्र का बखूबी उद्घाटन किया है। किस प्रकार जनता सरकार व उसके रीति-नीति से दुखी हैं। वे देखते हैं कि नेता वही है जो अत्याचारी व अन्यायी हो, जिस पर अपराधिक मामले दर्ज हों:-

जेसे जेतना बनि सका,ओतना लूटिन देश.

अबहूँ साजिश चल रही, बदलि बदलि के भेष।"13

देश में अत्याचार, अन्याय, शोषण अपने चरम पर है, चारों तरफ भ्रष्टाचार फैला हुआ है, जनता भूख से दम तोड़ रही है, लेकिन सरकार लूट मचाए हुए है:-

"चारिऊ कइति ई देस मा उजार मचा हइ।

कुर्सी निता अगार अउ पछार मचा हइ।

आधे से अधिक हैं जे पेट मुरुरि रहे हाँ,

एक कइती जनता म रार मचा हई।"14

वर्तमान समाज के नेताओं द्वारा किए जा रहे शोषण से व्यथित होकर कवि सोच समझकर चुनाव में वोट डालने का सुझाव दे रहे हैं। जो देश को अन्दर-अन्दर खोखला कर रहे हैं, जिनकी कथनी-करनी में अन्तर है, उनका चुनाव सोच-समझकर करें।

"अबकि सोचि समझि के ठप्पा मारा जई भला,

राजा बदलै का है, मुकुट उतारा जई भला।"15

समाज के लोगों व नेताओं में हो रहे त्वरित बदलाव से कवि खिन्न है, जिस प्रकार नेता चुनाव के बाद व चुनाव से पहले अपने अन्दर त्वरित बदलाव लाते हैं, उसका चित्रण किया है।

'अइसन चुपरय अइसन चाटँय कहाँ सिखेऽ,

दाना धरय, पछोरन, बॉटय कहाँ सिखेड

कुछ दिन पहिले कुछ दिन बाद माँ अतना अन्तर,

मुहु जोरय, अऊ मन से काटय कहाँ सिखेऽ।"16

चुनाव जीतने के बाद भारतीय राजनीती में पांच साल तक जनता का शोषण किस तरह से नेता करता है उसका सुंदर चित्रण बघेली कविताओं में मिलता है :-

गइरी कस कचरि-कचरि नटई भर अदरि लेय।

अॅइठी कस अइढ़-अइढ़ लॉपा कस बररि लेय।

काल्हु इया अमरित इँदरामन होई सरस-

मन पसार मनई का पाँच बरिस नररि लेय।17

बघेली मुक्तक:-बघेली भाषा काव्य के विविध विधाओं में अपनी अभिव्यक्ति दी है चाहे वह मुक्तक हो, गजल हो या अन्य कोई भी माध्यम, बघेली मुक्तक का उदारण देखिए:-

चाउर मां उरदा मेराय नहीं कबौ ।

हाड़ी का हाड़ा, डेराय नहीं कबौ।

लाख जतन कइके तू देखि लेय 'सरस'-

पानी मां पूड़ी, सेराय नहीं कबौ ।।18

बघेली गजल: -गजल अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है, इस विधा से कहने में प्रभाव बढ़ जाती है और व्यक्ति सुनते ही अभिभूत हो जाता है :-

अरे तू निहुरि के न आबा करा हो।

पछीती म लुकिके न गाबा करा हो।

न चउमॉस मॉही गरिब्बा के भीती,

कुदारी म खनिके गिराबा करा हो।

न लाँगर न आँधर न असहाय काँही,

बिसरिके कबौ ना बिराबा करा हो।

दऊ दूत कॉही न बिसराइ केंही,

चबेना क नॉई न चाबा करा हो।19

वैयक्तिक रागात्मक अनुभूतिः-वैयक्तिक जीवन से जुड़े विषय वस्तु, यथार्थ से जुड़े होने के कारण अनुभूति परक होते हैं। अँजुरी भर अँजोर काव्य कृति से चन्द पक्तियाँ दृष्टव्य है । :-

"आई कीन हाँथ से छटिगै राम दोही कै।

मन कै बाति मनै मां रहिगै राम दोही कै ।।"

xxx

भूंख लकलकान कबों थामें न थमै

उमिर गड़गड़ान कबौ थाम्हे न थमै ।।"20

ग्राम्य परिवेश एवं लोक जीवन:- बघेली भाषा में ग्रामीण परिवेश का चित्रण कमोवेश सभी रचनाकारों के साहित्य में देखने को मिलता है. इसका मूल कारण यही है कि बघेली का भौगोलिक क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों का रहा है ।सभी कवि ग्रामीण परिवेश में ही जीवन यापन किया है । कुछ पंकियाँ ग्रामीण परिवेश कि देखते चलें :-

सोहबत केर सुपारी पाउब, अबहूँ अपने गाँव माँ ।

नीमी केरि मुखारी पाउब, अबहूँ अपने गाँव माँ ।।21

नारी के प्रति दृष्टिकोण:-भारतीय नारी समग्रत: उपेक्षित रही है, पितृसत्तात्मक समाज में नारी कि हालात को लेकर कवियों ने अपने रचनाओं में स्थान दिया है । यह स्पष्ट होता है कि भारतीय नारी की प्रतिष्ठा को उस रूप में नहीं प्रतिष्ठित कर पाये जितना नारी को प्रतिष्ठा चाहिए । एक माँ की ममता और वात्सल्य-अनुराग को बघेली कवि सरस जी ने बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रांकित किया है। माँ अनगिनत मुशीबतों को झेलती हुई अपने पुत्र को हँसते-खेलते हुये देखकर अपार सुख की अनुभूति करती है तथा बोल उठती है-

"भूंखे पियासे रही दूनउ जून पय,

लाला का देखे अघान रही ।

लाला के लागै न दूब कै साँटी हो,

एहीं के लाने सधान रही।।"22

नारी का एक रूप, माँ के रूप में कवि सरस की काव्य कृति का विषय बना है तो दूसरा रूप दुल्हन के रूप में यथा-

"दादू की दुलही एतनी है गोर ,

कि निकारे से उनखे होई जात है अँजोर. ।।23

(3) आशावादी दृष्टिकोंणः-बघेली भाषा की काव्य रचना चाहे 'अँजुरी भर अँजोर' हो और चाहे 'आयाम के पंख' अथवा 'रुद्रशाह' खण्ड काव्य, सबमें आशावाद की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। कथ्य में कवि का आत्म विश्वास एक चारुत्व लाता हुआ प्रतीत होता है। -

"भले आज करिया अमाबास हिबै सरस,

काल्हु मिली देख लीन्हे उज्जर पुनमासी।" 24

परम्परावादी दृष्टिकोंणः-बघेली काव्य में कवि प्रगतिशीलता के बहाव में अवश्य बहते हुये प्रतीत होते हैं, किन्तु वह परम्परागत नॉव में सवार होकर। वे स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं: -

चाहे करोड़ उपाय करै कोऊ

देब न दीदी कै दीन कमाई ।।"25

यह कमाई है-भारतीयता, भारतीय परम्परा, लोक रीति और लोकनीत की मान्यताएँ एवं परम्परायें। परम्परा का अनुशरण भी प्रगतिशीलता हो सकती है। फलतः बघेली भाषा के माध्यम से कवि गुरु की महत्ता को प्रतिपादित करते हुये अभिव्यक्ति देता है:-

"माने महल मड़इ्या आपन, मखमल मानें सथरी।

गद्दा-पल्ली के चक्कर मा दिहे ना घर कै कथरी.. ।।"26

आधुनिकतावादी दृष्टिः- आमतौर पर बघेली काव्य में परम्परागत रुढ़ियों, कुरीतियों, और मान्यताओं को महत्त्व नही देता। वे बाल-विवाह के प्रबल विरोधी और विधवा विवाह के खिलाफ हैं। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिये 'ना परिवार बढ़ावा' का उद्घोष करते हैं, समाज एवं राष्ट्र की चिन्ता को वे अपनी निजी चिन्ता मानते हैं और अपनी लेखनी में व्यक्त करते हैं:-

"हमरे अन्तस के पीरा का कोऊ आज मिटाबा।

भूल करा न 'दुई से तीसर' ना परिबार बढ़ावा ।।" 27

समाज के हर वर्ग में विधवा विवाह का प्रचलन प्रारम्भ करने का प्रयास बघेली कवियों में देखने को मिलता है, जो आधुनिकतावादी दृष्टिकोण का द्योतक है।

बघेली भाषा में नए प्रतीक और बिम्ब :- नये-नये प्रयोगों और प्रतीकों से बघेली काव्य को सजाने- (सवॉरने और सामर्थ्य बनाने में बघेल खंड के शताधिक रचनाकार साधनारत हैं। अब बघेली बोली की कविताए वर्णन प्रधान तथा हास्य-विनोद शैली से ऊपर उठकर चिन्तन परक विषय-वस्तुओं के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। "हायकू और कणिका' जैसी सूक्ष्म रचनाओं को समझने हेतु स्थिर मानसिकता और सूक्ष्म-दृष्टि की आवश्यकता होती है। गहनतम भावों का बोध कराने वाली कणिकाएं प्रमाण के लिए सम्प्रेषित हैं यथा-

'मुरहर मां मगरगोह,

मगरोहन गाउँ-

ओलिया सिंगोहि के।"28

इसी प्रकार विदेशी विधाओं पर भी बघेली रचनाकारों ने सफलतम प्रयोग किया है। हायकू जैसी क्लिष्ट विधा जिसके अर्थवत्ता में व्यापकता होती है- "जो देखन में छोटे लगे, घाव करें गंभीर" कहावत को चरितार्थ करते हैं, एक नमूना प्रस्तुत है:-

"जड्डु बगार मां नधा,

नबा नटबा

पोकै पिल्ली।"29

उपमा और रूपक सादृश्य अलंकारों से युक्त तथा आम आदमी की कराह भरा चित्र उभारनें वाली रचना "बघेली कणिका" का लेखन भी साहित्य की इस धरा में हुआ है। एक उदाहरण देखिये:-

"नीचे धरती,

ऊपर आकास

दूनौ के बीच मां-

सुपारी कस

सरउता के धारि मां

कटिगा मनई।"30

इन पंक्तियों में क्या मार्मिक संवेदना नहीं निहित है? क्या धरती और आकाश सरौता के दोनों हिस्से की भाँति नहीं लगते? फिर क्या सुपाड़ी की भाँति मानव इसके धार में नहीं कट रहा? इतना ही नहीं बघेली कविताएं कभी हँसाती है,कभी हल्की चुटकी करती हैं तो कभी रुलाती भी हैं। कभी-कभी तो इन कविताओं से ऐसा व्यंग्य-बाण निकलता है जो तीखे घाव भर नहीं करते बल्कि अव्यवस्था की नग्न झाँकी तक जन-मानस के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। बघेली कि काव्य कृति 'अंजुरी भर अंजोर से कुछ मुक्तक, निवेदित है-

मारि-मारि सनकी सब साढ़ी सरपोटि लेय।

परगति कई फुन्नी सब भाजी कस खोटि लेय।

चप्पल चटकाबत फेर बगिहे खोर-खोर-

जइ दिन हैं नहा पुष्ट तै दिन खरभोटि लेय ।।31

आज के बदलते परिवेश में गिरते हुए मानव मूल्यों तथा पराकाष्ठा पर पहुँचती हुई अनैतिकता को रोकने के लिए बघेली साहित्य में जिन चुटीले भावों को समाहित किया गया है, एक झलक प्रस्तुत है बघेली पंक्तियों में:-

काका अउ काकी कै लागु-बाग लागें लाग।

चटर-चटर चटनी चऊराहा मां झारै लाग।

चारिउ कइत निहारि के चला करा 'सरस'-

मंदिर मां "महुआ महारानी" अब रहैं लाग ।।32

बघेली साहित्य में एक नयी विधा, जिसे जन-भाषा की एक उपज मान्य की जा सकती है- "पुछल्ला दोहा" नाम धारण कर, आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। बघेली भाषा में अक्षुण्य प्रयास के रूप में इसे स्वीकार करना अतिश्योक्ति नहीं होगा:-

"आँखी मां काजर गड़ें, बेंदी गढ़े लिलार।

नारी मां चूरी गड़ें, माहुर सब सिंगार ।।

बीतिगा बिन बरसै चऊमांस

अगुन छगुन माँ दिन कटे,उक्सुर,पुक्सुर रात

बिन मतलब भिन्सार भा,ललिक रहा अहिबात।।

बीतिगा बिन बरसै चऊमांस

गादर उमिर हमारि हइ, महकै घिव कस सोध।

दुइ कुरूआ खाये बिना, होय न जिउ का बोध। -

बीतिगा बिन बरसै चऊमांस।।33

हिन्दी की भाँति ही बघेली बोली में, गीत-व्यवस्था की परिधि में 'बघेली गीत' विविध रसों में लिखे जा रहे हैं। इन गीतों से कहीं वेदना के स्वर निकलते हैं तो कहीं प्राकृतिक सर्व भौम से सत्यापित तथ्य प्रतीकात्मक शैली में, गीत 'ॲजुरी भर अंजोर से उद्धरित है:-

बोलि दे रे कोइली, एक बेरि बोलिदे।

मिसिरी घुरी बानी, एक बेरि बोलिदे।

सुद्ध-मुद्ध काली कस रूप-रंग तोर,

खुरूहुर के भेली कस हिरदय है गोर,

केसर-कस्तूरी कंस बास घोलि दे।   मिसरी ....– ।।

अंग-अंग थिरिक परें तोरे फूंक से,

पात-पात महक परें तोरे कूक से,

थन्ना से अपने एक बेरि डोलिदे।   मिसरी......- ।।

आमा-अमराई अउ कुल्लू गदरांय,

पत्ता-पतरोई तक लागें बिदुरांय,

पोर-पोर पेड़ मां परेम बोरि दे। मिसरी.....-।।34

जनभाषा को, जन-जीवन की भावनाओं से जोड़ने का, अथक प्रयास बघेली कवियों द्वारा किया जा रहा है। बघेली में अनेक ऐसी रचनाएं लिखी जा रही हैं, जिसमें सांगोपांग रूपक के दर्शन होते हैं। उपमायें तो अपने आप साथ-साथ चलती ही हैं। व्याकरण के सांचे में ढली हुई, ऐसी कविताओं का अपना अनूठा महत्व है। बघेली काव्य कृति "अमरउती" से ऐसी ही प्रयोगवादी चंद पंक्तियाँ, यहाँ पर प्रस्तुत है:-

धरम केरि खुरपी से, अधरम के चारा का,
गुन-गल्ला गाहैं का, राहा कस छोलि देय।
लगन केर बरदा, करतूति केरि दउरी नाध,
दमदार दानन का, बूसा से झोलि देय।।
भाग केर खेतबा मां, करम केर बिजहा बोई,
खादू लउलितिया केर, अमिस-खमिस छींटि देय।
पबरित मन पम्प सेही, पैसरम केर पानी का
बढ़नउक बिरबन के जरि मांही सींचि देय ।।
बुद्धि केरि बढ़नी से, अगना घमण्ड केर,
सूदक अउ सोबर कस, कूरा हटाइ देय।
छाप-लीपि उज्जर, बिचार केरि छुही से,
भीत मां परेम अगरबत्ती जलाइ देय ।।35

2. निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि बघेली भाषा व काव्य के विविध आयाम को लेकर बघेली काव्य के कवियों ने विपर्यय, व्यंग्यात्मक रूप में अपनी बात कही है। समाज और राजनीति के प्रति भाषा का तीखापन भी बघेली साहित्य में भरा पड़ा है। भाषा के रूप में सामान्य आमजन के बोल-चाल की भाषा रही है,जिसमें ठेठ देशज शब्दों के साथ आम बोल-चाल की भाषा से विलुप्त हो रहे शब्दों का प्रयोग भी किया गया है। उपरोक्त विषय पर व्यापक दृष्टि डालने के बाद समग्रतःयह कहा जा सकता है कि बघेली साहित्य विविध विधाओं में समृद्ध है और रूपक, बिम्ब, प्रतीक, चित्रात्मक प्रयोग के साथ-साथ इस उपभाषा को देश और प्रदेश से जोड़ने का प्रयास इस जिले के रचनाकारों ने तन्मयता से किया है, और कर भी रहे हैं। तभी तो यह बोली अपनी सहेली-अवधी, बुंदेली, भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी के तुल्य ही इस परम्परागत धरातल से ऊपर उठ चुकी है और विविध आयाम में अपना पंख फैलाकर विस्तार को प्राप्त कर रही है, वर्तमान में सोसल मीडिया और यूट्यूब, रील्स, शार्ट फिल्म और फीचर फिल्म भी युवा पीढ़ी द्वारा बनाया जा रहा है

संदर्भ

हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -339
अजुरी.भर अँजोर-डॉ श्रीनिवास शुक्ल सरस, पृ.91
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -336
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -336
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -343

हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -378
बघेली बिरवाही, सं. डॉ. सूर्यनारायण गौतम,जी. एच. पब्लिकेशन प्रयागराज (उ.प्र.)पृष्ठ -58
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -शिव शंकर मिश्र सरस,VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -374
अजुरी.भर अँजोर-डॉ श्रीनिवास शुक्ल सरस, पृ.14
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -373
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -शिव शंकर मिश्र सरस,VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -374
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -373
अजुरी.भर अँजोर-डॉ श्रीनिवास शुक्ल सरस, पृ.22
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -374
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -शिव शंकर मिश्र सरस,VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -374
हिंदी नाटक, निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी,बघेली,बुन्देली भाषा साहित्य -VIKAS PUBLICATION HOUSE PVT.LTD,E-28,SECTOR-8NOIDA-201301(U.P.)पृष्ठ -374
अँजुरी भर अँजोर-श्रीनिवास शुक्ल सरस-सिद्धांत पब्लिकेशन वर्ष-2003,पृष्ठ-12
सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -42
देश केंहीं देहि मा- श्रीनिवास शुक्ल सरस-युगधारा फ़ाउंडेशन लखनऊ उत्तरप्रदेश वर्ष- 2003 पृष्ठ-11
अजुरी.भर अँजोर-डॉ श्रीनिवास शुक्ल सरस, पृ.75)
अंजुरी भर अँजोर : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 45
अंजुरी भर अँजोर : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 96
अंजुरी भर अँजोर : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 23
अंजुरी भर अँजोर : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 23
अमरउत्ती : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृ. 4
अंजुरी भर अँजोर : श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 04
रसखीरः श्रीनिवास शुक्ल सरस - पृष्ठ- 42
सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -18
सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -18

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -18

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -19

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -19

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -19-20

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -19-20

सीधी ज़िले का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास- श्रीनिवास शुक्ल सरस- सिद्धांत पब्लिकेशन उत्तरी करौंदिया सीधी सन्-1994 पृष्ट -20-21